Part - I
19/09/20

THE INDIAN MONEY MARKET (Part-B)

MAIN DEFECTS OF THE INDIAN MONEY MARKET.

भारतीय मुद्रा-बाजार अनेक दोषों से परिपूर्ण है। इन दोषों के कारण ही इसकी तुलना लंदन एवं न्यूयार्क जैसे सुसंगठित मुद्रा-बाजारों से नहीं की जा सकती। भारतीय मुद्रा-बाजार के निम्नलिखित प्रमुख दोष हैं :→

1. समुचित संगठन का अभाव :→ भारतीय मुद्रा-बाजार सही अर्थों में संगठित नहीं है। इसके विभिन्न अंगों में परस्पर संगठन एवं सहयोग का अभाव है। भारतीय मुद्रा-बाजार के दो प्रधान अंग हैं: आधुनिक मुद्रा-बाजार तथा देशी मुद्रा-बाजार। ये दोनों एक-दूसरे को अपना प्रतिद्वन्दी मानते हैं। देशी महाजन एवं साहूकार की कार्य-विधियों पर अभी तक किसी का कोई प्रभावपूर्ण नियंत्रण नहीं हो सका है।

2. ब्याज की दरों में विभिन्नता :→ भारतीय मुद्रा-बाजार का दूसरा प्रधान दोष बाजार के भिन्न-भिन्न भागों में ब्याज की दरों में विभिन्नता है। केन्द्रीय बैंकिंग जाँच-समिति के अनुसार भारतीय मुद्रा-बाजार में ब्याज की दरें 3 प्रकार की होती हैं :- बैंक दर, व्यावसायिक बैंकों की ब्याज-दर तथा महाजनों की ब्याज दर। इन दरों में बहुधा कोई सम्बन्ध नहीं रहता है। सबकी ब्याज-दरें

अलग-अलग होती है।

3. सुविकसित एवं सुसंगठित बिल बाजार का अभाव:→

निम्नांकित कारणों से भारत में अभी तक सुसंगठित एवं सुविकसित बिल-बाजार का अभाव है:-

(i) बैंक बहुधा अपने धन को प्रथम श्रेणी की प्रति भूतियों में ही लगाते हैं।

(ii) भारत में स्वीकृति गृहों का अभाव है जिनसे बिल से सम्बन्धित व्यापारियों की आर्थिक स्थिति का समुचित ज्ञान नहीं हो पाता है।

(iii) बिलों की विविधता भी सुविकसित बिल बाजार के मार्ग में कठिनाई उपस्थित करती है।

(iv) ब्रिटेन में राज्य एवं केन्द्रीय सरकारें अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए 50 से 90 दिनों की अवधि के ट्रेजरी बिल जारी करती हैं।

उपरोक्त कारणों से भारत में संगठित बाजार का अभाव है जिसका प्रभाव मुद्रा-बाजार पर भी पड़ता है।

4. मुद्रा-बाजार में धन का अभाव: → भारतीय मुद्रा-बाजार का एक प्रमुख दोष माँग की तुलना में धन की पूर्ति का अभाव

Scanned with CamScanner

है। भारतीय मुद्रा-बाजार में धन के अभाव में धन के अभाव में सर्वाधिक प्रमुख कारण देश की निर्धनता भी है।

5. ऋण की माँग में मौसमी परिवर्तन :-

भारत में मुद्रा-बाजार का एक प्रधान दोष मुद्रा की माँग में मौसमी परिवर्तन भी है। व्यापार के खास-खास मौसम में मुद्रा की माँग में वृद्धि हो जाती है, किन्तु पूर्ति में इसके अनुरुप वृद्धि नहीं होने के कारण बाजार में कठिनाई होने लगती है।

6. विदेशी मुद्रा-बाजार से सम्पर्क का अभाव:- भारतीय मुद्रा-बाजार का विदेशी मुद्रा-बाजार से बहुत ही कम सम्बन्ध है। विनिमय-नियंत्रण तथा विभिन्न प्रकार के प्रतिबंधों के कारण भारतीय मुद्रा-बाजार और विदेशी-बाजारों के बीच पूँजी का आवागमन नगण्य रहा है।

Suggestions to Remove the Defects of the Indian Money Market:

भारतीय मुद्रा-बाजार के दोषों को दूर करने के लिए समय-समय पर बहुत सी समितियों तथा आयोगों ने विभिन्न प्रकार के सुझाव प्रस्तुत किये हैं :-

1 लाइसेंसदार भण्डार-गृहों का निर्माण।

2. साख पत्रों के पुनः कटौती करने की सुविधा का विस्तार।

3. देशी बैंकरों का रजिस्ट्रेशन तथा इनके कार्यों पर नियंत्रण।

4. समाशोधन-गृहों का पुनर्गठन।

5. कटौती की दरों में कमी।

6. स्टाम्प-करों में कमी।

7. सरकार द्वारा बचत को प्रोत्साहन।

उक्त उपायों द्वारा भारतीय मुद्रा-बाजार के दोषों को दूर करने का प्रयास हो रहा है तथा इनमें कुछ सफलता भी प्राप्त हुई है।

The End
Thank you

Scanned with CamScanner